# ❍ 15 / 12 / 21 की मुरली से चार्ट ❍
## ⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *फॉलो फादर किया ?*

➢➢ *याद और पढाई पर पूरा पूरा ध्यान दिया ?*

➢➢ *पुराने संस्कार रुपी अस्थियों को सम्पूरण स्थिति के सागर में समाया ?*

➢➢ *विस्तार को सार में समाने की जादूगरी सीखी ?*

────────────────────────

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆
❂ *तपस्वी जीवन* ❂
⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *समय प्रमाण लव और ला का बैलेन्स रखो लेकिन ला में भी लव महसूस हो। इसके लिए आत्मिक प्यार की मूर्त बनो* तब हर समस्या को हल करने में सहयोगी बन सकोगे। *शिक्षा के साथ सहयोग देना ही आत्मिक प्यार की मूर्त बनना है।*

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

---

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂
✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

✺ *"मैं बापदादा के समीप रत्न हूँ"*

〰✧ सदा स्वयं बाप के समीप रत्न समझते हो? समीप रत्न की निशानी क्या होगी? समीप अर्थात् समान। समीप अर्थात् संग में रहने वाले। संग में रहने से क्या होता है? वह रंग लग जाता है ना। *जो सदा बाप के समीप अर्थात् संग में रहने वाले हैं उनको बाप का रंग लगेगा तो बाप समान बन जायेंगे।* समीप अर्थात् समान ऐसे अनुभव करते हो? हर गुण को सामने रखते हुए चेक करो कि क्या क्या बाप समान है? हर शक्ति को सामने रख चेक करो कि किस शक्ति में समान बने हैं। आपका टाइटल ही है 'मास्टर सर्वगुण सम्पन्न, मास्टर सर्व शक्तिवान'।

〰✧ तो सदा यह टाइटल याद रहता है? सर्वशक्तियाँ आ गई अर्थात् विजयी हो गये फिर कभी भी हार हो नहीं सकती। जो बाप के गले का हार बन गये उनकी कभी भी हार नहीं हो सकती। *तो सदा यह स्मृति में रखो कि मैं बाप के गले का हार हूँ, इससे माया से हार खाना समाप्त हो जायेगा। हार खिलाने वाले होंगे, खाने वाले नहीं।* ऐसा नशा रहता है?

〰✧ हनमान को महावीर कहते हैं ना। महावीर ने क्या किया? लंका को जला दिया। खुद नहीं जला, पूंछ द्वारा लंका जलाई। तो लंका को जलाने वाले महावीर हो ना। माया अधिकार समझकर आये लेकिन आप उसके अधिकार को खत्म कर अधीन बना दो। हनमान की विशेषता दिखाते हैं कि वह सदा सेवाधारी था।

अपने को सेवक समझता था। तो यहाँ जो सदा सेवाधारी हैं वही माया के अधिकार को खत्म कर सकते हैं। जो सेवाधारी नहीं वह माया के राज्य को जला नहीं सकते। हनुमान के दिल में सदा राम बसता था ना। एक राम दूसरा न कोई। *तो बाप के सिवाए और कोई भी दिल में न हो। अपने देह की स्मृति भी दिल में नहीं। सुनाया ना कि देह भी पर है, जब देह ही पर होगई तो दूसरा दिल में कैसे आ सकता।*

⟡˚ ˚ ••☆••⟡˚ ˚ ••☆••⟡˚ ˚ ••☆••⟡˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

⟡˚ ˚ ••☆••⟡˚ ˚ ••☆••⟡˚ ˚ ••☆••⟡˚ ˚

---

⟡˚ ˚ ••☆••⟡˚ ˚ ••☆••⟡˚ ˚ ••☆••⟡˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

⟡˚ ˚ ••☆••⟡˚ ˚ ••☆••⟡˚ ˚ ••☆••⟡˚ ˚

〰✧ *आसन ही सिंहासन प्राप्त कराता है।* अब आसन है फिर सिंहासन है। हलचल वाला आसन पर एकाग्र होकर बैठ नहीं सकता। इसलिए कहा *व्यर्थ समाप्त, अशुभ समाप्त* - तो अचल हो जायेंगे और अचल स्थिति के आसन पर सहज और सदा स्थित हो सकेंगे। देखो, आप सबका यादगार यहाँ अचलघर है। अचलघर देखा है ना? यह किसका यादगार है?

〰✧ *आप सबके स्थिति का यादगार यह अचलघर है।* अनुभव करो, ट्रायल करते जाओ, यूज करते जाओ। ऐसे नहीं समझ लेना, हाँ, सर्व शक्तियाँ तो हैं ही। समय पर यूज हो। यूज नहीं करेंगे तो समय पर धोखा मिल सकता है। इसलिए छोटी-मोटी परिस्थिति में यूज करके देखो। परिस्थितियाँ तो आनी ही हैं,

आती भी हैं। पहले भी बापदादा ने कहा है कि वर्तमान समय अनुभव करते हुए चलो।

~✧ हर शक्ति का अनुभव करो, हर गुण का अनुभव करो। *ऐसे अनुभवी मूर्त बनो जो कोई भी आवे तो आपके अनुभव की मदद से उस आत्मा को प्राप्ति हो जाए।* दिन-प्रतिदिन आत्मायें शक्तिहीन हो रही हैं, होती रहेगी। ऐसी आत्माओं को आप अपनी शक्तियों की अनुभूतियों से सहारा बन अनुभव करायेंगे। अच्छा। मालिक है ना तो मालेकम सलाम, बाप कहते हैं - मालिकों को सलाम। अच्छा।

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

———————————————

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

~✧ *सभी ने बाप से पूरा-पूरा अधिकार ले लिया है? पूरा अधिकार लेने के लिए पुराना सब कुछ देना पड़े। तो दोनों सौदे किये हैं ना?* या तेरा सो मेरा लेकिन मेरे को हाथ नहीं लगाना- ऐसे तो नहीं है ना? *जब एक शब्द बदल जाता है अर्थात् मेरा तेरे में बदल जाता तो डबल लाइट हो जाते हैं।* ज़रा भी मेरापन आया तो ऊपर से नीचे आ जाते हैं। तेरा तेरे अर्पण तो सदा डबल लाइट और सदा ऊपर उड़ते रहेंगे अर्थात् ऊँची स्थिति में रहेंगे।

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧ ⁰ ° ••✰••✧ ⁰ ° ••✰••✧ ⁰ ° ••✰••✧ ⁰ °

────────────────────────

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
( आज की मुरली के सार पर आधारित... )

✺ *"ड्रिल :- उंच पद के लिए पढाई और याद की यात्रा में रहना"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा अपने मन-बुद्धि को बाह्य सभी बातों से हटाकर भृकुटी के मध्य केन्द्रित करती हूँ... इस देह रूपी ड्रेस से मैं आत्मा बाहर निकल फ़रिश्ता ड्रेस धारण करती हूँ... और इस धरा से ऊपर उड़ते हुए, सागर, नदियों, जंगलों, पहाड़ों को पार करती हुई आसमान में बादलों के ऊपर बैठ जाती हूँ...* आसमान में चाँद, सितारों से मिलकर और ऊपर उड़कर सूक्ष्म वतन में बापदादा के सम्मुख जाकर बैठ जाती हूँ राजयोग की पढाई पढने...

❉ *मुझे डबल सिरताज बनाकर विश्व की राजाई मेरे नाम करने के लिए अमूल्य ज्ञान देते हुए प्यारे बाबा कहते हैं:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... यह ईश्वरीय पढ़ाई वह जागीर, वह दौलत है जो विश्व का राज्य भाग्य दिलायेगी... *इसलिये इस महान पढ़ाई में रग रग से जुट जाओ... ईश्वर पिता की गोद में बैठ पढ़ते हो और यादो से विश्व अधिकारी सहज ही बन जाते हो... कितना प्यारा और मीठा सा यह भाग्य है... इसके नशे में डूब जाओ..."*

➳ _ ➳ *बाबा के मोहब्बत की रोशनी में सच्ची कमाई कर हीरे समान चमकते हुए मैं आत्मा कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे प्यारे बाबा... मै आत्मा आपके प्यार भरी छाँव में, *सुखो भरी गोद में बैठ राजाई भाग्य पा रही हूँ... देवताई संस्कारो से सजकर मीठा सा मुस्करा रही हूँ, और सुनहरे सुखो की ओर कदम

बढ़ाती जा रही हूँ..."*

❊ *अपने पलकों में बिठाकर यादों के समुन्दर की गहराईयों में डुबोते हुए मीठे बाबा कहते हैं:-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... *सच्ची पढ़ाई को दिल जान से पढ़कर अधिकारी बन जाओ... अमूल्य खजानो को और अथाह सुखो की दौलत से मालामाल बन जाओ...* ईश्वर पिता से सब कुछ लेकर देवताओं सा खुबसूरत जीवन बाँहों में भरकर खिलखिलाओ... डबल सिरताज बन सदा की मुस्कान से सज जाओ..."

➺ _ ➺ *रूहानी नशे में खोकर बाबा को अपने नैनों में बसाकर मैं आत्मा कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... *मै आत्मा आपकी मीठी यादो और अमूल्य ज्ञान रत्नों से अथाह सुखो की मालकिन और देवताओ सा रूप रंग पा रही हूँ...* कभी दुखो में गरीब सी... मै आत्मा आज शिव बाबा आपकी बाँहों में पूरे विश्व धरा का अधिकार पा रही हूँ..."

❊ *अमूल्य ज्ञान रत्नों की निधियों से मुझे मालामाल करते हुए मेरे रत्नाकर बाबा कहते हैं:-* "प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... *ईश्वरीय पढ़ाई ही सारे सच्चे सुखो का आधार है... सारा मदार इस पढ़ाई पर ही है... जितना ज्ञान रत्नों को मन और बुद्धि में समाओगे उतना ही प्यारा सतयुगी सुखो में इठलाओगे... इसलिए इस पढ़ाई में जीजान से जुट जाओ...* और डबल ताज धारी बन विश्वधरा पर राजाई का लुत्फ़ उठाओ..."

➺ _ ➺ *इस एक जन्म की पढाई से 21 जन्मों की ऊँची तकदीर बनाते हुए मैं आत्मा कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... *मै आत्मा ईश्वरीय पढ़ाई से अथाह अमीरी का खजाना पा रही हूँ... राजयोगी बनकर किस कदर धनवान् होती जा रही हूँ...* दुखो की मोहताज से मुक्त होकर ईश्वरीय बाँहों में अमीर और अमीर होती जा रही हूँ..."

---

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
( आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित... )

✺ *"ड्रिल :- फॉलो फादर करना है*"

➳ _ ➳ मम्मा बाबा ने शिव बाबा की श्रेष्ठ मत पर चल कर जो श्रेष्ठ कर्म किये उन श्रेष्ठ कर्मो का एक एक यादगार उनकी कर्मभूमि मधुबन में स्पष्ट दिखाई देता है। इसलिए मम्मा बाबा को फॉलो करने का दृढ़ संकल्प लेते ही मन बुद्धि सहज ही परमात्मा की उस अवतरण भूमि मधुबन में पहुंच जाते हैं और मम्मा बाबा की साकार यादें बुद्धि में सहज ही स्पष्ट हो जाती हैं। *ऐसे ही मम्मा बाबा की साकार यादों का अनुभव करते करते मैं मन बुद्धि से पहुंच जाती हूँ उस स्थान पर जहां मम्मा बाबा ज्ञान योग से अपने हर ब्राह्मण बच्चे की पालना करते थे*।

➳ _ ➳ मैं देख रही हूं स्वयं को उस क्लासरूम में जहां मम्मा बाबा आ कर मुरली चलाते थे। मम्मा बाबा के ममतामई, स्नेही और मधुर महावाक्यों को सुनने के लिए अनेक ब्राह्मण आत्मायें यहां उपस्थित हैं। *सामने संदली पर ममता की साक्षात मूर्त मम्मा और प्रेम तथा वात्सलय की प्रतिमूर्ति ब्रह्मा बाबा विराजमान है। दोनों के चेहरे पर दिव्य नूर और दृष्टि में रूहानी कशिश सबको अपनी ओर आकर्षित कर रही है*। मुख से ओम ध्वनि का उच्चारण करती, सितार पर बड़ी तन्मयता के साथ दिव्य गीत गाती मम्मा की मधुर आवाज सुनने वाली हर ब्राह्मण आत्मा के हृदय के तारों को झंकारित कर रही है।

➳ _ ➳ ऐसा लग रहा है जैसे सभी ब्राह्मण आत्मायें देह से ऊपर उठ कर मुक्त पंछी के समान रूहानियत के आकाश में विचरण कर रही हैं। *मम्मा बाबा के मुख से मधुर वाणी सुनने के बाद अब एक एक करके सभी ब्राह्मण बच्चे मम्मा बाबा की ममतामयी गोद में बैठ अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कर रहें हैं*। मम्मा बाबा ज्ञान की लोरी दे कर सबको अपने वात्सलय का अनुभव करवा रहें हैं। मेरी बारी आने पर मैं जैसे ही मम्मा बाबा की गोद मे बैठती हूँ *ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे शरीर है ही नही बस थोड़ी चेतनता है किंतु अहसास नही है कि शरीर कहाँ है*। बहुत ही हल्केपन और स्वयं को असीम शक्ति से मैं भरपूर अनुभव कर रही हूं।

➳ _ ➳ मुरली क्लास के बाद अब मम्मा बाबा सभी बच्चों को सैर पर ले जा रहें हैं। ब्रह्मा बाबा चलते चलते बीच बीच मे खड़े हो कर बच्चों से पूछ रहे हैं:- " शिव बाबा याद है"। सभी बच्चे बारी बारी से बाबा का हाथ पकड़ कर खुशी से सैर कर रहें हैं। खुली जगह पर बैठ सभी चाय पी रहें हैं। *बीच बीच मे बाबा ज्ञान की बातें बच्चों को समझा रहें हैं और ज्ञान सुनाते सुनाते कभी अपने अनादि स्वरूप में तो कभी अपने आदि स्वरूप में स्थित होने ड्रिल भी करवा रहें हैं*। मैं देख रही हूं ड्रिल करते करते कई ब्राह्मण आत्मायें ट्रांस में पहुंच कर बाबा को श्रीकृष्ण के बाल रूप में देख गोपी बन उनके साथ रास करने में खोई हुई हैं।

➳ _ ➳ साकार मम्मा बाबा के साथ के इन अनमोल क्षणों का भरपूर आनन्द ले कर अब मैं ब्राह्मण आत्मा अपने सेवा स्थल पर लौट रही हूँ। *मन मे अब केवल एक ही संकल्प है मात पिता को फॉलो कर, मम्मा बाबा के समान सबकी ज्ञान योग से पालना कर सबको आप समान बनाना*। इस संकल्प को पूरा करने के लिए अब मैं अपने हर संकल्प, बोल और कर्म पर विशेष अटेंशन दे कर हर कर्म करने से पहले चेक कर रही हूं कि क्या वो मम्मा बाबा के समान है। मम्मा बाबा की शिक्षाओं को जीवन मे धारण कर सम्पूर्णता के लक्ष्य को पाने का तीव्र पुरुषार्थ करते हुए अब मैं *मम्मा बाबा के समान स्नेह और शक्तिरूप बन ईश्वरीय यज्ञ में अपने तन-मन-धन को सफल कर रही हूं*।

————————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
( आज की मुरली के वरदान पर आधारित... )

✺ *मैं पुराने संस्कार रूपी अस्थियों को सम्पूर्ण स्थिति के सागर में समाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं बाप समान और सम्पूर्ण आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

——————————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
( आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित... )

✺ *मैं आत्मा विस्तार को सार में समाने की जादूगरी सीख लेती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा बाप समान हूँ ।*
✺ *मैं ज्योति बिंदु स्वरूप आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

——————————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
( अव्यक्त मुरलियों पर आधारित... )

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ होलीहंसों की विशेषता को सभी अच्छी तरह से जानते हो। *'सदा होली हैपी हंस अर्थात् स्वच्छ और साफ दिल'*। ऐसे होलीहंसों की स्वच्छ और साफ दिल होने के कारण *हर शुभ आशायें सहज पूर्ण होती हैं। सदा तृप्त आत्मा रहते हैं। श्रेष्ठ संकल्प किया और पूर्ण हुआ।* मेहनत नहीं करनी पड़ती। क्यों? बापदादा को सबसे प्रिय, सबसे समीप साफ दिल प्यारे हैं। *साफ दिल सदा बापदादा के दिलतख्त नशीन, सर्व श्रेष्ठ संकल्प पूर्ण होने के कारण वृत्ति में, दृष्टि में, बोल में, सम्बन्ध-सम्पर्क में सरल और स्पष्ट एक समान दिखाई देते हैं।* सरलता की निशानी है - दिल, दिमाग, बोल एक समान। दिल में एक, बोल में और (दूसरा) - यह सरलता की निशानी नहीं है। *सरल स्वभाव वाले सदा निर्माणचित, निरहंकारी, निर-स्वार्थी होते हैं। होलीहंस की विशेषता - सरल-चित, सरल वाणी, सरल वृत्ति, सरल दृष्टि।*

✵ *ड्रिल :- "होली हंस की विशेषता- सरल-चित, सरल वाणी, सरल वृत्ति, सरल दृष्टि को स्वयं में अनुभव करना"*

➼ _ ➼ *मैं होली हंस आत्मा हूँ...* ज्ञान सूर्य शिव बाबा से ज्ञान गुण और शक्तियों की किरणें निरंतर मुझ आत्मा पर आ रही हैं... और *मेरा जीवन दिव्यता से भरपूर हो रहा है... मेरा मन निर्मल हो रहा है, बुद्धि स्वच्छ बन रही है और संस्कार दिव्य हो रहे हैं...*

➼ _ ➼ *मैं होली हंस आत्मा अवगुण रूपी कंकड़-पत्थर को अलग कर गुण रुपी मोती चुगने वाली हूँ...* मैं होली हंस आत्मा *सदा दूसरों के गुणों को देखती हूँ... और गुणों का ही वर्णन करती हूँ...* मुझ होली हंस का दिल स्वच्छ और साफ है... मुझ आत्मा की सभी आशाएं सहज ही पूर्ण हो जाती है... मैं होली हंस आत्मा सदा बापदादा की सबसे प्रिय लाडली बच्ची हूँ...

➼ _ ➼ मैं आत्मा होली हंस हूँ... *इसलिए मैं किसी के अवगुणों को नहीं देखती हूँ... अब मेरी अवगुणी दृष्टि, गुणग्राही दृष्टि में परिवर्तन हो रही है...* हर एक के गुणों व विशेषताओं को ही... देखने का लक्ष्य रखने वाली मैं आत्मा होली हंस हूँ...

➼ _ ➼ *मैं होली हंस आत्मा किसी की निंदा, ग्लानि और परचिन्तन कभी नहीं करती...* सदा फॉलो फादर करती हूँ... जैसे ब्रह्मा बाबा जितना नॉलेजफुल थे उतना ही उनका सरल स्वभाव भी था... *मैं होली हंस आत्मा भी सफलतामूर्त बनने के लिए... सरलता और सहनशीलता के गुणों को धारण करती हूँ...*

➼ _ ➼ स्वच्छ और साफ दिल होने के कारण मैं होली हंस आत्मा *सदा तृप्त रहती हूँ...* जो भी श्रेष्ठ संकल्प करती हूँ... *स्वतः ही सब पूर्ण हो जाते हैं...* सदा मैं आत्मा *बापदादा के दिलतख्तनशीन* रहती हूँ... *मैं निरहंकारी, निःस्वार्थी व निर्माण चित्त आत्मा हूँ... मेरा दिल, दिमाग, बोल सब एक समान होते हैं...*

⨀_⨀ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔